वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 287

चारित्रशुद्धि व्रत

(हरिवंशपुराण के आधार से)

—: संकलन : —

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

—प्रकाशक—

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

E-mail—Jambudvip@yahoomail.co.in

प्रथम संस्करण	आश्विन शु. पूर्णिमा	मूल्य
1100 प्रतियाँ	(शरदपूर्णिमा)	32/-रु.
	26 अक्टूबर 2007	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

—: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :—

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

—: मार्गदर्शन :—

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

—: निर्देशन :—

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

—: सम्पादक :—

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

जैनधर्म के अन्तिम चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के शासनकाल में हम और आप सभी जीवनयापन कर रहे हैं। यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमें ऐसे समय में जन्म लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ जबकि हम सभी के मध्य में पूज्य ज्ञानमती माताजी जैसी महान साध्वी विराजमान हैं। पूज्य माताजी के बारे में कुछ भी कहना, कुछ भी लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के सदृश प्रतीत होता है।

प्रायः हम देखते हैं कि कोई लेखक है तो कोई कवि है, कोई कुशल प्रवचनकार है, कोई महान सिद्धान्तवेत्ता है परन्तु ज्ञानमती माताजी के अन्दर हमें ये सभी गुण एक साथ देखने को मिलते हैं, उन्होंने अपनी लेखनी से २५० से अधिक ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

पूज्य माताजी के जीवन की यह बहुत बड़ी विशेषता है कि उन्होंने आगम के विरुद्ध न तो स्वयं कभी लेखनी चलाई और न ही किसी की लिखी बातों का समर्थन किया, उनका हमेशा यही कहना रहता है कि हम जो भी करें, जो भी कहें, सब आगम के अनुकूल ही हो।

अब मैं अपने मूल विषय के बारे में कहना चाहूँगा कि पिछले अनेकानेक वर्षों से "चारित्रशुद्धि" व्रत करने की परम्परा समाज में चली आ रही है, पिछले कुछ वर्षों से पूज्य ज्ञानमती माताजी ने जब इस चारित्रशुद्धि व्रत के मंत्रों को पढ़ा तो उन्हें "ब्रह्मचर्यव्रत" के मंत्रों को पढ़कर लगा कि इसमें पुरुषवर्ग की प्रधानता के कारण स्त्रीविरतिवाचक शब्दों का ही प्रयोग किया गया है किन्तु महिलाएँ भी अजानकारीवश इन्हीं मंत्रों को पढ़ती हैं तब पूज्य

माताजी ने इन मंत्रों के साथ ही महिलाओं के करने योग्य पुरुषविरतिवाचक मंत्रों को बनाया तथा अन्य भी कुछ मंत्रों में हरिवंशपुराण के आधार से संशोधन किया है।

अब पूज्य माताजी द्वारा संकलित इस पुस्तक को "वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला" से प्रकाशित कराने का हमें अवसर प्राप्त हो रहा है, यह प्रसन्नता की बात है।

इसके साथ ही काफी दिनों से कई भक्तगण पूज्य माताजी के पास निवेदन कर रहे थे कि चारित्रशुद्धि पूजा की रचना कर दीजिए, सभी के निवेदन को स्वीकार करके पूज्य माताजी ने चारित्रशुद्धि व्रत की नई सुन्दर पूजा बनाई है तथा व्रत की विधि–कथा आदि भी इस पुस्तक में हरिवंशपुराण के आधार से प्रकाशित की गई है।

इस प्रकार इस "चारित्रशुद्धिव्रत" को करके आप सभी अपने चारित्र की उत्तरोत्तर वृद्धि करें, यही मंगलकामना है।

आभार

इस "चारित्रशुद्धि व्रत" पुस्तक के प्रकाशन में बाल ब्रह्मचारिणी कु. मंजू जैन—शिष्या-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी (सुपुत्री-श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ, अध्यक्ष-चौक सर्राफा एसोसिएशन, लखनऊ) ने भक्तामर व्रत के उद्यापन के उपलक्ष्य में ज्ञानदानस्वरूप अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया, एतदर्थ दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

–सम्पादक

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

जैनधर्म के अन्तिम चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के शासनकाल में हम और आप सभी जीवनयापन कर रहे हैं। यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमें ऐसे समय में जन्म लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ जबकि हम सभी के मध्य में पूज्य ज्ञानमती माताजी जैसी महान साध्वी विराजमान हैं। पूज्य माताजी के बारे में कुछ भी कहना, कुछ भी लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के सदृश प्रतीत होता है।

प्रायः हम देखते हैं कि कोई लेखक है तो कोई कवि है, कोई कुशल प्रवचनकार है, कोई महान सिद्धान्तवेत्ता है परन्तु ज्ञानमती माताजी के अन्दर हमें ये सभी गुण एक साथ देखने को मिलते हैं, उन्होंने अपनी लेखनी से २५० से अधिक ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

पूज्य माताजी के जीवन की यह बहुत बड़ी विशेषता है कि उन्होंने आगम के विरुद्ध न तो स्वयं कभी लेखनी चलाई और न ही किसी की लिखी बातों का समर्थन किया, उनका हमेशा यही कहना रहता है कि हम जो भी करें, जो भी कहें, सब आगम के अनुकूल ही हो।

अब मैं अपने मूल विषय के बारे में कहना चाहूँगा कि पिछले अनेकानेक वर्षों से "चारित्रशुद्धि" व्रत करने की परम्परा समाज में चली आ रही है, पिछले कुछ वर्षों से पूज्य ज्ञानमती माताजी ने जब इस चारित्रशुद्धि व्रत के मंत्रों को पढ़ा तो उन्हें "ब्रह्मचर्यव्रत" के मंत्रों को पढ़कर लगा कि इसमें पुरुषवर्ग की प्रधानता के कारण स्त्रीविरतिवाचक शब्दों का ही प्रयोग किया गया है किन्तु महिलाएँ भी अजानकारीवश इन्हीं मंत्रों को पढ़ती हैं तब पूज्य

माताजी ने इन मंत्रों के साथ ही महिलाओं के करने योग्य पुरुषविरतिवाचक मंत्रों को बनाया तथा अन्य भी कुछ मंत्रों में हरिवंशपुराण के आधार से संशोधन किया है।

अब पूज्य माताजी द्वारा संकलित इस पुस्तक को "वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला" से प्रकाशित कराने का हमें अवसर प्राप्त हो रहा है, यह प्रसन्नता की बात है।

इसके साथ ही काफी दिनों से कई भक्तगण पूज्य माताजी के पास निवेदन कर रहे थे कि चारित्रशुद्धि पूजा की रचना कर दीजिए, सभी के निवेदन को स्वीकार करके पूज्य माताजी ने चारित्रशुद्धि व्रत की नई सुन्दर पूजा बनाई है तथा व्रत की विधि-कथा आदि भी इस पुस्तक में हरिवंशपुराण के आधार से प्रकाशित की गई है।

इस प्रकार इस "चारित्रशुद्धिव्रत" को करके आप सभी अपने चारित्र की उत्तरोत्तर वृद्धि करें, यही मंगलकामना है।

आभार

इस "चारित्रशुद्धि व्रत" पुस्तक के प्रकाशन में ब्रह्मचारिणी चन्द्रप्रभा बेन (शिष्या-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी) ध.प. श्री प्रवीण भाई शाह-अहमदाबाद (गुज.) ने ज्ञानदानस्वरूप अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया, इनके सुपुत्र चि. विजय भाई शाह भी धर्मकार्यों में विशेष रुचि रखते हैं, दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा हम उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करते हुए उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

-सम्पादक

आद्य वक्तव्य

–गणिनी ज्ञानमती

मुनियों के तेरह प्रकार के चारित्र प्रसिद्ध हैं। पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति। पाँच महाव्रत के अनंतर रात्रिभोजन त्यागरूप में छठा अणुव्रत भी माना है। मूलाचार में एवं श्री गौतमस्वामी के मुखकमल से निर्गत मुनि, आर्यिकाओं के दैवसिक–रात्रिक एवं पाक्षिक प्रतिक्रमण में इस छठे अणुव्रत का बहुत बार उल्लेख आता है। टीकाकारों ने स्पष्ट किया है कि महाव्रत पाँच ही होते हैं। चूंकि साधु दिन में एक बार ही भोजन करते हैं अत: यह रात्रिभोजन त्याग छठा अणुव्रत ही है, महाव्रत नहीं है।

इस चारित्रशुद्धिव्रत मंत्र की पुस्तक में इन तेरह विध चारित्र के भेदों में मन, वचन, काय को कृत, कारित, अनुमोदना से गुणित करने पर नव भेद हो जाते हैं अत: हरिवंशपुराण ग्रंथ के आधार से ये मंत्र १२३४ हो जाते हैं।

अन्यत्र छपी पुस्तकों में मंत्रों में समिति और गुप्ति के मंत्रों में भी महाव्रत लगाया है सो अनुचित है चूंकि 'सर्वदोष प्रायश्चित्त विधि' मंत्र ३३ हैं उनमें भी समिति और गुप्ति में महाव्रत शब्द का प्रयोग नहीं है। (आगे देखें)

इस १२३४ व्रत को करने की परंपरा उपवास या अल्पाहार आदि से मुनियों में आर्यिकाओं में तो है ही, श्रावक–श्राविकाओं में भी प्रचलित है।

इसी प्रकार से जो ब्रह्मचर्य व्रत के १८० मंत्र हैं उनमें पुरुषवर्ग के लिए करने योग्य मंत्र हैं। यथा—

ॐ ह्रीं मनसाकृत नरस्त्रीस्पर्शनेन्द्रिय विषयाब्रह्मविरति महाव्रत–प्रोषधोद्योतनाय नम:। महिलाओं के प्रश्न आते हैं कि आप हमें ब्रह्मचर्यव्रत

देते समय पुरुष के साथ संपर्क त्याग का नियम देते हैं न कि महिलाओं के संपर्क त्याग का, अत: ब्रह्मचर्यव्रत की भावना या शुद्धि हेतु ये मंत्र कैसे जपना? आदि।

मैंने इन १८० मंत्रों में से 'स्त्रीवाचक' शब्द निकाल कर जपने को लिखा है। अत: ये १८० मंत्र पुन: जोड़े हैं आप सभी आचार्य, मुनि और आर्यिकाएं इस विषय पर ध्यान दें और स्वयं अगले संस्करण छपाने में स्त्रियों के लिए ऐसे मंत्र अवश्य जोड़ें तथा समिति और गुप्ति के मंत्रों से मैंने 'महाव्रत' शब्द निकाल दिया है, 'सर्वदोषप्रायश्चित्तविधि' मंत्रों के आधार से एवं महाव्रत पांच ही हैं। इस कथन के अनुसार ही संशोधन किया है।

इसी प्रकार सत्यमहाव्रत के मंत्रों में भी इसी मुद्रित प्रति में हरिवंशपुराण के आधार से प्रस्तावना में श्लोक में नाम अलग हैं और आगे मंत्रों में कुछ अंतर है वह भी विचारणीय था अत: सुधारा है।

यथा—'**भीर्ष्या–स्वपक्ष–पैशून्य–क्रोध–लोभात्मशंसनै:।**
द्वासप्ततिर्नवघ्नैस्ते परनिन्दान्वितैरिति।।१०१।।'

(विधि–चारित्रशुद्धि पृ. ३)

असत्य भाषण ८ प्रकार से होता है, जैसे–भी–भय, ईर्ष्या, स्वपक्ष–समर्थन, चुगुलखोरी, क्रोध, लोभ, आत्मप्रशंसा और पर की निन्दा।

मंत्र निम्न प्रकार है—

''ॐ ह्रीं मनसा कृताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नम:।''

यहां 'अभिख्यासत्य' का अर्थ मेरी समझ में नहीं आया है। मैंने मंत्र दिया है—

''ॐ ह्रीं मनसा कृतभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नम:।''

आगे 'ईर्ष्या' का मंत्र इसमें नहीं है उस जगह पर परपक्ष– असत्य है

तथा परनिंदा असत्य की जगह 'पराप्रशंसनासत्य' है। अतः ये मंत्र भी मैंने संशोधित किये हैं। यथा—

अन्यत्र से छपी हुई 'चारित्रशुद्धिव्रत' पुस्तक में छपे मंत्र–

ॐ ह्रीं मनसा कृताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसाकृत स्वपक्षासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसाकृत परपक्षासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसाकृत पैशुन्यासत्यसत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसाकृत क्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसाकृत लोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसाकृत पराप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

मैंने जो मंत्र संशोधित किए हैं–उनमें एक–एक नमूने यहाँ दिये हैं।

१. ॐ ह्रीं मनसा कृतभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

२. ॐ ह्रीं मनसा कृतेर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

३. ॐ ह्रीं मनसा कृतस्वपक्षपुष्टि–असत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

४. ॐ ह्रीं मनसा कृतपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

५. ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

६. ॐ ह्रीं मनसा कृतलोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

७. ॐ ह्रीं मनसा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

८. ॐ ह्रीं मनसा कृतपरनिन्दासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ऐसे ही अन्यत्र से छपी पुस्तक में अचौर्यव्रत में 'उपधि अदत्तविरति'

छूटा है अतः 'पानादत्तग्रहणविरति' के स्थान पर 'उपधिअदत्तविरति' मंत्र दिया है।

इसी प्रकार एषणासमिति में ४६ दोषों में 'व्यपनिक' और 'चित्रयोग' दोष आये हैं। उनके स्थान पर मूलाचार के अनुसार 'वनीपक' और 'चूर्णदोष' के मंत्र दिये हैं तथा 'सर्वदोष प्रायश्चित्त विधि' के ३३ मंत्रों में महाव्रत के बाद पाँच समितियों को पुनः तीनगुप्तियों को लिया है। इसी क्रम से मैंने इन मंत्रों को रखा है अतः इस संशोधित ग्रंथ के अनुसार ही १२३४ व्रत करने वाले आप सभी साधुवर्ग–मुनिगण–आर्यिकागण और श्रावक–श्राविकागण जाप्य करें, ऐसी मेरी प्रेरणा है। जो रत्नत्रय में अनुरागी मुमुक्षुवर्ग सम्यग्दर्शन, ज्ञान सहित इन तेरह प्रकार के चारित्र का व्रत करेंगे वे निश्चित ही अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने में सफल होंगे। यह व्रत सभी के स्वात्मसिद्धि में निमित्त बनें, यही मेरी मंगल कामना है।

राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान : टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि : आसोज सुदी १५ (शरदपूर्णिमा)
वि. सं. १९९१(सन् १९३४)
गृहस्थ का नाम : कु. मैना
माता-पिता : श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत : ई. सन् १९५२ में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन
एवं गृहत्याग आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।
क्षुल्लिका दीक्षा : चैत्र कृ. १, ई. सन् १९५३ को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में
आर्यिका दीक्षा : वैशाख कृ. २, ई. सन् १९५६ को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती १०८ आचार्यश्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व : अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं २५० विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् १९९५ में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा : हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली — दीक्षा तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों

का विकास, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन १०८ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा की प्रेरणा।

महोत्सव प्रेरणा : पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ।

शैक्षणिक प्रेरणा : 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा : जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (१९८२ से १९८५), समवसरण श्रीविहार (१९९८ से २००२), महावीर ज्योति (२००३-२००४) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

—पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् १९७२ में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् १९७४ में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं—

१. सन् १९७२ से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

२. सन् १९७४ से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

३. सन् १९७४ से १९८५ तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

४. सन् १९७४ से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है-कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, तेरहद्वीप जिनालय तथा नवग्रहशांति जिनमंदिर।

५. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग १५००० ग्रंथ संग्रहीत हैं।

६. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

७. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

८. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

९. यात्रियों के ठहरने के लिए डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

१०. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी, मिनी ट्रेन, झूलें आदि हैं।

११. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिनभर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित भगवान ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य तीर्थों के दर्शन हेतु कम से कम एक बार अवश्य पधारें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

१. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली।
२. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
३. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी १९, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
४. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
५. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
६. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
७. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-९२।
८. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
९. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
१०. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

१. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
२. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, ७९२ विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
३. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
४. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
५. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
६. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
७. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
८. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
९. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
१०. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
११. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
१२. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
१३. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
१४. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
१५. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-७।
१६. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
१७. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली

विषयानुक्रमणिका

क्र.स.	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	चारित्रशुद्धिव्रत पूजा	१-७
२.	चारित्रशुद्धि व्रत विधि	८-१५
३.	अहिंसा महाव्रत के १२६ मंत्र	१६-२९
४.	सत्य महाव्रत के ७२ मंत्र	३०-३७
५.	अचौर्य महाव्रत के ७२ मंत्र	३८-४५
६.	ब्रह्मचर्य महाव्रत के १८० मंत्र (पुरुषों के लिए)	४६-६५
७.	ब्रह्मचर्य महाव्रत के १८० मंत्र (महिलाओं के लिए)	६६-८५
८.	अपरिग्रह महाव्रत के २१६ मंत्र	८६-१०९
९.	रात्रिभोजन त्याग अणुव्रत के १० मंत्र	११०
१०.	ईर्यासमिति के ९ मंत्र	१११
११.	भाषासमिति के ९० मंत्र	११२-१२१
१२.	एषणा समिति के ४१४ मंत्र	१२२-१६७
१३.	आदाननिक्षेपण समिति के ९ मंत्र	१६८
१४.	प्रतिष्ठापनासमिति के ९ मंत्र	१६९
१५.	मनगुप्ति के ९ मंत्र	१७०
१६.	वचनगुप्ति के ९ मंत्र	१७१
१७.	कायगुप्ति के ९ मंत्र	१७२
१८.	अथ सर्वदोषप्रायश्चित्तविधि:	१७३-१७६

श्री चारित्रशुद्धिव्रत की आरती

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

तर्ज —झुमका गिरा रे.....

आरति करो रे,
श्री चारित शुद्धी व्रत मंत्रों की, आरति करो रे।
सम्यक्दर्शन, ज्ञान और चारित्र तीन ये रत्न कहे।
इनमें से सम्यक्चारित के, भेद त्रयोदश वर्णित हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
व्यवहार और निश्चयचारित की, आरति करो रे।।१।।

पाँच महाव्रत, पाँच समिति, त्रयगुप्ती के जो भेद करें।
इक सौ सैंतिस होने पर, इनको नवकोटी से गुणिये।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री बारह सौ चौंतिस[१] मंत्रों की, आरति करो रे।।२।।

शास्त्र-पुराणों में इस व्रत की, महिमा का वर्णन मिलता।
विधिपूर्वक व्रत करने से, प्राणी संसारजलधि तिरता।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
परमसिद्धिपददायक व्रत की, आरति करो रे।।३।।

प्रभुवर मुझको शक्ति मिले, मैं परम अतीन्द्रिय सुख पाऊँ।
इस व्रत को करके मैं अपना, जीवन सफल बना पाऊँ।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
यही "सारिका" भाव संजोकर, आरति करो रे।।४।।

---

१. १३७×९=१२३३, रात्रिभोजन त्याग अणुव्रत का १ अधिक, ऐसे १२३३+१=१२३४ होते हैं।

भजन

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

तर्ज —जहाँ डाल-डाल पर.....

चारित्रशुद्धि व्रत करने से, चारित्र विमल हो जाता,
मनवांछित फल मिल जाता-२।।
इस चारितशुद्धी व्रत में बारह सौ चौंतिस व्रत माने।
इस व्रत को करके प्राणी अपने, कर्मशत्रु को हानें—हाँ-कर्म शत्रु को हानें।
यह महिमाशाली व्रत मानव को, शाश्वत सुख दिलवाता,
मनवांछित फल मिल जाता।।१।।

सम्यक्चारित के तेरह भेद, जिनागम में वर्णित हैं।
इनके फिर भेद करें तो हो, जाते इक सौ सैंतिस हैं-होते इक सौ सैंतिस हैं।।
नव से गुणिते बारह सौ चौंतिस, मंत्र करें सुख-साता,
मनवांछित फल मिल जाता।।२।।

राजा श्रेणिक ने गुरुमुख से, इस मंत्र की महिमा जानी।
व्रत को श्रद्धापूर्वक करके, तीर्थंकर प्रकृती बांधी-तीर्थंकर प्रकृती बांधी।।
सोलहकारण भावना सहित व्रत, शिवपद प्राप्त कराता,
मनवांछित फल मिल जाता।।३।।

हे प्रभु! दो शक्ति मुझे मैं पंच-परावर्तन से छूटूँ।
तेरहविध चारित को पा करके, मोक्षधाम में तिष्ठूँ-हाँ-मोक्षधाम में तिष्ठूँ।।
"सारिका" यही शुभभाव हृदय को, परमानन्द दिलाता,
मनवांछित फल मिल जाता।।४।।

चारित्रशुद्धिव्रत पूजा

(बारह सौ चौंतिस व्रत पूजा)

रचयित्री—गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

—स्थापना-शंभुछंद—

सम्यक्चारित्र त्रयोदशविध, ये परमानंद प्रदाता हैं।
इनके बारह सौ चौंतिस व्रत, ये परमसिद्धि के दाता हैं।।
इनका वन्दन पूजन करके, विधिवत् आराधन करते हैं।
निज हृदय कमल में धारण कर, हम स्वात्म सुधारस भरते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशतचतुस्त्रिंशन्मंत्र-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशतचतुस्त्रिंशन्मंत्र-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशतचतुस्त्रिंशन्मंत्र-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथाष्टक—

(चाल-नंदीश्वर पूजा)

गंगानदि को जल लाय, कंचन भृंग भरूँ।
त्रयधार करूँ सुखदाय, आतम शुद्ध करूँ।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।१।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशतचतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन गंध, घिस कर्पूर मिला।
जजते चारित्र अमंद, निज मन कमल खिला।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।२।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशतचतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशिकर समतंदुल श्वेत, खंड विवर्जित हैं।
शिवरमणी परिणय हेत, पुंज समर्पित हैं।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।३।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशतचतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सित कुमुद नील अरविंद, लाल कमल प्यारे।
मदनारि विजय के हेतु, पूजूँ सुख कारे।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।४।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशतचतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली पयसार, पायस मालपुआ।
चारित्र रत्न को ध्याय, आतम सौख्य हुआ।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।५।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशतचतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप कपूर प्रजाल, ज्योति उद्योत करे।
अंतर में भेद विज्ञान, प्रगटे मोह हरे।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।६।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशतचतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध अग्नि में ज्वाल, सुरभित गंध करे।
निज आतम अनुभव सार, कर्म कलंक हरे।।

बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।७।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशतचतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला फलसार, जंबू निंबु हरे।
शिवकांता संगम हेत, तुम ढिग भेंट करें।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।८।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशतचतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिलादिक द्रव्य मिलाय, कंचन पात्र भरें।
चारित को अर्घ्य चढ़ाय, शिव साम्राज्य वरें।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।९।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशतचतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

शांतीधारा मैं करूँ, चरित मंत्र हितकार।
चउसंघ में शांती करो, हरो सर्व दुख भार।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि से पूजहूँ, चारित्र मंत्र महान।
दु:ख दरिद्र संकट टले, बनूँ आत्मनिधिमान।।११।।

दिव्य पुष्पांजलि:।

जाप्य—१. ॐ ह्रीं असि आ उसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नम:।

अथवा

२. ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशशतचतुस्त्रिंशद्व्रतेभ्यो नम:।

जयमाला

—शंभु छंद—

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, प्रभु धर्मचक्र के कर्ता हो।
जय जय अनंत दर्शन सुज्ञान, सुख वीर्य चतुष्टय भर्ता हो।।
जय अंतरंग लक्ष्मी अनंत गुण, धृत् त्रैलोक्य शिखामणि हो।
जय समवसरण वैभव धारी, जय दिव्यध्वनी के स्वामी हो।।१।।

तीर्थंकर परम्परा शाश्वत, यह शाश्वत धर्म सौख्यकारी।
तीर्थंकर शासन सार्वभौम, यह जिनशासन भवदुखहारी।।
जो 'तीर्थ' चलाते तीर्थंकर, यह 'तीर्थ' धर्म ही माना है।
यह धर्म 'रत्नत्रयमय' माना, 'चारित्ररूप' भी माना है।।२।।

जो भवदधि से तारे सबको, सब जन को पूर्ण पवित्र करे।
सब कर्म मैल को धो करके, आत्मा को पावन शुद्ध करे।।
बस वही तीर्थ सच्चा जग में, इसके कर्ता तीर्थंकर हैं।
इनके आश्रय से सब भविजन, भववारिधि तिरते सुखकर हैं।।३।।

जय जय चारित्र त्रयोदश विध, जो भववारिधि में नौका है।
जय पाँच महाव्रत पाँच समिति, त्रयगुप्ति कर्मनग भेत्ता हैं।।
जय इनके भेद एक सौ सैंतिस, मोक्षमार्ग के नेता हैं।
इनको नव कोटी से गुणिये, बारह सौ चौंतीस भेद कहें।।४।।

जय जयतु अहिंसा प्रथम महाव्रत, चौदह भेद रूप मानो।
मन वच तन को कृत कारित अनुमति, से गुणिते विधिवत जानो।।
तब इक सौ छब्बिस भेद मंत्र, जपने से चारित शुद्धी हो।
इनके व्रत करने से महाव्रत, पालन करने की शक्ती हो।।५।।

जय सत्य, अचौर्य महाव्रत को, अठ आठ भेद से सरधानो।
ब्रह्मचर्य महाव्रत बीस भेद, परिग्रह विरती चौबिस जानो।।
ये नव से गुणित बहत्तर पुन:, बहत्तर की संख्या करिये।
ब्रह्मचर्य के एक सौ अस्सी परिग्रह-त्याग द्विशत सोलह गिनिये।।६।।

छठा अणुव्रत रात्री भोजन, विरती दश भेद सहित वर्णित।
ईर्या समिती नवकोटि सहित, मुनिगण पालें आगम भाषित।।
भाषा समिती के दशों भेद, नवकोटि-गुणित नब्बे विध हैं।
एषण समिती छ्यालीस भेद, नवगुणित चार सौ चौदह हैं।।७।।

आदान निक्षेप, उत्सर्ग समिति, नव नव भेदों से भाषित हैं।
मन वचन काय की त्रय गुप्ती, नव से गुणिते सत्ताइस हैं।।
ये भेद-प्रभेद सभी मिलकर, बारह सौ चौंतिस व्रत मानें।
इनका जो विधिवत् व्रत करते, और मंत्र जपें श्रुत वच जानें।।८।।

वे भव्य नियम से महाव्रती, बनकर संसार जलधि तिरते।
निज परम अतीन्द्रिय सौख्य पाय, त्रिभुवन साम्राज्य तुरत लभते।।
मैं सम्यग्दर्शन ज्ञान सहित, व्यवहार चरित्र पूर्ण पाऊँ।
फिर निश्चय रत्नत्रय परिणत, निज आत्म ध्यान में रम जाऊँ।।९।।

हे भगवन्! ऐसा दिन कब हो, जब परम अतीन्द्रिय सुख पाऊँ।
भव पंच परावर्तन छूटें, कैवल्य ज्ञानमति प्रगटाऊँ।।
त्रैलोक्य शिखर पर जा करके, तिष्ठूँ शाश्वत विश्राम करूँ।
हे नाथ! मुझे ऐसी मति दो, तुम चरणों में ही वास करूँ।।१०।।

—दोहा—

सम्यक्चारित रत्न यह, जिनगुणसंपति हेतु।
नमूँ-नमूँ नित भाव से, पाऊँ भवदधि सेतु।।११।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एक सहस्र-द्विशतत्रिंशन्मंत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

बारह सौ चौंतीस व्रत, मंत्र जपें जो भव्य।
सम्यग्ज्ञानमती सहित, वे पावें सुख नव्य।।

।।इत्याशीर्वादः।।

चारित्रशुद्धि व्रत विधि

(हरिवंशपुराण के आधार से)

—अनुष्टुप्—

चतुर्दशस्वहिंसार्थं जीवस्थानेषु भाविताः।
त्रियोगनवकोटिघ्ना, ते षड्विंशं शतं स्फुटम्।।१००।।

भीर्ष्यास्वपक्षपैशुन्यक्रोधलोभात्मशंसनैः ।
द्वासप्ततिर्नवघ्नैस्ते परनिन्दान्वितैरिति।।१०१।।

ग्रामारण्यखलैकान्तैरन्यत्रोपध्यभुक्तकैः ।
सपुष्टग्रहणैः प्राग्वद्द्वासप्ततिरमी मताः।।१०२।।

नृदेवाचित्ततिर्यक्स्त्रीरूपैः पञ्चेन्द्रियाहतैः।
नवघ्नैः ब्रह्मचर्यैः स्युः, शतं तेऽशीतिमिश्रितम्।।१०३।।

—उपजातिः—

चतुष्कषाया नव नोकषाया, मिथ्यात्वमेते द्विचतुःपदे च।
क्षेत्रं च धान्यं च हि कुप्यभाण्डे, धनं च यानं शयनासनं च।।१०४।।

अन्तर्बहिर्भेदपरिग्रहास्ते, रन्धैश्चतुर्विंशतिराहतास्तु।
ते द्वे शते षोडशसंयुते स्युर्महाव्रते स्यादुपवासभेदाः।।१०५।।

—अनुष्टुप्—

षष्ठे दशोपवासाः स्युरनिच्छा नव कोटिभिः।
प्रत्येकं नव विज्ञेया, त्रिगुप्तिसमितित्रिके।।१०६।।

—आर्या—

भावोपमाव्यवहारप्रतीत्यसंभावनासुभाषायाम्।
जनपदसंवृतिनामस्थापनारूपा दश नवघ्नाः।।१०७।।

—अनुष्टुप्—

षट्चत्वारिंशद्दोषानेषणासमितौ मतान् ।
नवघ्नान् विघ्नितुं कार्यास्तावन्त उपवासकाः।।१०८।।

त्रयोदशविधस्यैव चारित्रस्य विशुद्धये।
विधौ चारित्रशुद्धौ स्युरुपवासाः प्रकीर्तिताः।।१०९।।

पाँच महाव्रत, तीन गुप्ति, पाँच समिति के भेद से चारित्र के तेरह भेद हैं। चारित्रशुद्धि विधि में इन सबकी शुद्धि के लिए पृथक्-पृथक् उपवास करने की प्रेरणा दी गई है। प्रथम ही अहिंसा महाव्रत है सो १. बादर एकेन्द्रियपर्याप्तक २. बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक ३. सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक ४. सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक ५. द्वीन्द्रिय पर्याप्तक ६. द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक ७. त्रीन्द्रिय पर्याप्तक ८. त्रीन्द्रिय अपर्याप्तक ९. चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक १०. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक ११. असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक १२. असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक १३. संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक और १४. संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक। इन चौदह प्रकार के जीवस्थानों की हिंसा का त्याग मन-वचन-काययोग तथा कृत्कारित- अनुमोदना इन नौ कोटियों से करना चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर प्रथम अहिंसा व्रत के एक सौ छब्बीस उपवास होते हैं और एक-एक उपवास के बाद

एक-एक पारणा होने से एक सौ छब्बीस ही पारणाएँ होती हैं।।१००।।

दूसरा सत्य महाव्रत है सो १. भय २. ईर्ष्या ३. स्वपक्ष पुष्टि ४. पैशुन्य ५. क्रोध ६. लोभ ७. आत्मप्रशंसा और ८. परनिन्दा। इन आठ निमित्तों से बोले जाने वाले असत्य का पूर्वोक्त नौ कोटियों से त्याग करना चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर द्वितीय सत्य महाव्रत के बहत्तर उपवास होते हैं तथा उपवास के बाद एक-एक पारणा होने से बहत्तर ही पारणाएँ होती हैं।।१०१।।

तीसरा अचौर्य महाव्रत है सो १. ग्राम २. अरण्य ३. खलिहान ४. एकान्त ५. अन्यत्र ६. उपधि ७. अभुक्तक और ८. सपुष्टग्रहण। इन आठ भेदों से होने वाली चोरी का पूर्वोक्त नौ कोटियों से त्याग करना चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर तृतीय अचौर्य महाव्रत में बहत्तर उपवास होते हैं तथा प्रत्येक उपवास की एक-एक पारणा होने से बहत्तर ही पारणाएँ होती हैं।।१०२।।

चौथा ब्रह्मचर्य महाव्रत है सो मनुष्य, देव, अचित्त और तिर्यंच इन चार प्रकार की स्त्रियों का प्रथम ही स्पर्शनादि पाँच इन्द्रियों और तदनन्तर पूर्वोक्त नौ कोटियों से त्याग करना चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर ५×४=२०×९=१८० एक सौ अस्सी उपवास होते हैं और इतनी ही पारणाएँ होती हैं।।१०३।।

पाँचवाँ परिग्रह त्याग महाव्रत है। सो चार कषाय, नौ नो कषाय और एक मिथ्यात्व इन चौदह प्रकार के अन्तरंग और दोपाये, (दासी-दास आदि) चौपाये, (हाथी-घोड़ा आदि) खेत, अनाज, वस्त्र, बर्तन, सुवर्णादि धन, यान (सवारी), शयन और आसन-इन दस प्रकार के

बाह्य, दोनों मिलाकर चौबीस प्रकार के परिग्रह का नौ कोटियों से त्याग करना चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर परिग्रहत्याग महाव्रत में दो सौ सोलह उपवास होते हैं और इतनी ही पारणाएँ होती हैं।।१०४-१०५।।

छठा रात्रिभोजन त्याग अणुव्रत यद्यपि तेरह प्रकार के चारित्रों में परिगणित नहीं है तथापि गृहस्थ के संबंध से मुनियों पर भी असर आ सकता है अर्थात् गृहस्थ द्वारा रात्रि में बनायी हुई वस्तु को मुनि जानबूझकर ग्रहण करे तो उन्हें रात्रिभोजन का दोष लग सकता है। इस प्रकार के रात्रिभोजन का नौ कोटियों से त्याग करना चाहिए तथा अनिच्छा—दूसरे की जबर्दस्ती से भी रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिए। इस भावना को लेकर रात्रिभोजन त्याग व्रत में दश उपवास होते हैं और दश ही पारणाएँ होती हैं। मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति इन तीन गुप्तियों तथा ईर्या, आदान-निक्षेपण और प्रतिष्ठापन समिति इन तीन समितियों में प्रत्येक के नौ कोटियों की अपेक्षा नौ-नौ उपवास होते हैं अर्थात् तीन गुप्तियों के सत्ताईस उपवास और सत्ताईस पारणाएँ हैं तथा उपरिकथित तीन समितियों के भी सत्ताईस उपवास और सत्ताईस पारणाएँ जाननी चाहिए।।१०६।।

भाषा समिति में १. भाव सत्य २. उपमा सत्य ३. व्यवहार सत्य ४. प्रतीत सत्य ४. सम्भावना सत्य ६. जनापद सत्य ७. संवृत्ति सत्य ८. नाम सत्य ९. स्थापना सत्य और १०. रूप सत्य इन दश प्रकार के सत्य वचनों का नौ कोटियों से पालन करना पड़ता है। इस अभिप्राय को लेकर भाषा समिति में नब्बे उपवास होते हैं तथा इतनी ही पारणाएँ होती हैं।।१०७।।

और एषणा समिति में नौ कोटियों से लगने वाले छियालिस

दोषों को नष्ट करने के लिए चार सौ चौदह उपवास होते हैं तथा उतनी ही पारणाएँ होती हैं।।१०८।।

इस प्रकार तेरह प्रकार के चारित्र को शुद्ध रखने के लिए चारित्रशुद्धि व्रत में सब मिलाकर एक हजार दो सौ चौंतीस उपवास कहे हैं तथा इतनी ही पारणाएँ कही गई हैं। इस व्रत में छह वर्ष दश माह आठ दिन लगते हैं।।१०९।।

विशेष—उपवासों की संख्या इस यंत्र से स्पष्ट जानना चाहिए—

अहिंसा महाव्रत	१४×९=	१२६
सत्य महाव्रत	८×९=	७२
अचौर्य महाव्रत	८×९=	७२
ब्रह्मचर्य महाव्रत	२०×९=	१८०
अपरिग्रह महाव्रत	२४×९=	२१६
रात्रिभोजन त्याग अणुव्रत	१×९=९+१=	१०
ईर्यासमिति	१×९=	९
भाषा समिति	१०×९=	९०
एषणा समिति	४६×९=	४१४
आदाननिक्षेपण समिति	१×९=	९
प्रतिष्ठापना समिति	१×९=	९
मनोगुप्ति	१×९=	९
वचनगुप्ति	१×९=	९
कायगुप्ति	१×९=	९
		१२३४

इस प्रकार १२३४ उपवास व इतने ही पारणे होते हैं।

विधि—प्रथम उपवास प्रथम पारणा, द्वितीय उपवास द्वितीय पारणा, तीसरा उपवास तीसरा पारणा, इस प्रकार आगे-आगे करते रहने से यह व्रत ६ वर्ष १० महीने और ८ दिन में पूर्ण होता है और महीने में १० उपवास करने पर १० वर्ष साढ़े तीन मास में पूर्ण होते हैं।

कदाचित् ऐसी शक्ति न हो तो बीच-बीच में भी उपवास किये जा सकते हैं और २५-३० वर्ष में समाप्त किये जा सकते हैं पर उपवासों की संख्या कुल १२३४ होनी चाहिए।

जो महानुभाव इस व्रत को निरतिचार पालन करते हैं उनके १३ प्रकार का निर्मल चारित्र पलता है। इस व्रत का विधान हरिवंशपुराण के ३४वें सर्ग से लिया गया है।

चारित्रशुद्धि व्रत की कथा

(श्री बारह सौ चौंतीस व्रत की कथा)

मगध देश में राजगृही नगर का स्वामी राजा श्रेणिक न्यायपूर्वक राज्य शासन करता था। उसकी परम सुन्दरी और जिनधर्मपरायण श्रीमती चेलना पट्टरानी थी, सो जब विपुलाचल पर महावीर भगवान का समवसरण आया, तब राजा प्रजा सहित वंदना को गया और वंदना-स्तुति करके मनुष्यों की सभा में बैठकर धर्मोपदेश सुनने लगा।

पश्चात् राजा ने पूछा—हे प्रभु! षोडशकारण व्रत से तो तीर्थंकर पद मिलता ही है, परन्तु क्या अन्य प्रकार से भी मिल सकता है, सो

कृपाकर कहिए। तब गौतम स्वामी ने कहा—राजन् सुनो! जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में अवन्ती देश है, वहाँ उज्जयिनी नगरी है, जहाँ हेमवर्मा राजा अपनी शिवसुन्दरी रानी सहित राज्य करता था।

एक दिन राजा वनक्रीड़ा करने को वन में गया था और वहाँ चारण मुनिराज को देखकर नमस्कार किया तथा मन में समताभाव धरकर विनय सहित पूछने लगा—भगवन्! कृपा करके बताइये कि मैं किस प्रकार तीर्थंकर पद प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त करूँ? तब श्री गुरु ने कहा—राजन्! तुम बारह सौ चौंतीस व्रत करो। यह व्रत भादों सुदी १ से प्रारंभ होता है इसमें १२३४ उपवास करना चाहिए। एक महीने में १० उपवास करने पर यह व्रत दश वर्ष और साढ़े तीन माह में पूरा होता है। व्रत के दिन आरंभ परिग्रह का त्याग कर भक्ति और पूजन में निमग्न रहे और '**ॐ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः**' इस मंत्र का १०८ बार जाप करें। जब व्रत पूरा हो जावे, तब उद्यापन करें।

झारी, थाली, कलश आदि उपकरण चैत्यालय में भेंट करें, चौंसठ ग्रंथ बांटे, चार प्रकार का दान करे तथा १२३४ लाडू श्रावकों के घर बांटे, पाठशालादि स्थापन करे इत्यादि और यदि उद्यापन की शक्ति न होवे तो दूना व्रत करें।

इस प्रकार राजा ने व्रत की विधि सुनकर उसे यथाविधि पालन किया व उद्यापन भी किया।

अन्त में समाधिमरण करके अच्युत स्वर्ग में देव हुआ। वहाँ से चयकर वह विदेह क्षेत्र के विजयापुरी में धनंजय राजा के चन्द्रभानु नाम

का तीर्थंकर पदधारी पुत्र हुआ। उसके गर्भादिक पाँच कल्याणक हुए।

इस प्रकार राजा हेमवर्मा स्वर्ग के सुख भोगकर तीर्थंकर पद प्राप्त करके इस व्रत के प्रभाव से मोक्ष गया। इसलिए हे श्रेणिक! तीर्थंकर पद प्राप्त करने के लिए यह व्रत भी एक साधन है।

यह सुनकर राजा श्रेणिक ने भी श्रद्धासहित इस व्रत को धारण किया और षोडशकारण भावनाएँ भी भायीं सो तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया। अब आगामी चौबीसी में वे प्रथम तीर्थंकर होकर मोक्ष जावेंगे। इस प्रकार और भी जो भव्य जीव इस व्रत का पालन करेंगे, वे भी उत्तमोत्तम सुखों को पाकर मोक्षपद प्राप्त करेंगे।

—स्वास्थ्य मंत्र—

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं आरोग्यलाभं कुरु कुरु स्वाहा।

—शान्ति मंत्र—

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शान्तिकराय सर्वोपद्रवशान्तिम् कुरु कुरु ह्रीं नमः।

—धनवृद्धि मंत्र—

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धिभ्यो नमः।

अथ चारित्रशुद्धिमंत्रजाप्याः

अहिंसा महाव्रत के १२६ मंत्र

१. ॐ ह्रीं मनसा कृतबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२. ॐ ह्रीं मनसा कारितबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४. ॐ ह्रीं वचसा कृतबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५. ॐ ह्रीं वचसा कारितबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः १

१०. ॐ ह्रीं मनसा कृतबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

११. ॐ ह्रीं मनसा कारितबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१३. ॐ ह्रीं वचसा कृतबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१४. ॐ ह्रीं वचसा कारितबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य द्वितीय प्रकारः २

१९. ॐ ह्रीं मनसा कृतसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२०. ॐ ह्रीं मनसा कारितसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२२. ॐ ह्रीं वचसा कृतसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२३. ॐ ह्रीं वचसा कारितसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः ३

२८. ॐ ह्रीं मनसा कृतसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२९. ॐ ह्रीं मनसा कारितसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३१. ॐ ह्रीं वचसा कृतसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३२. ॐ ह्रीं वचसा कारितसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः ४

३७. ॐ ह्रीं मनसा कृतद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३८. ॐ ह्रीं मनसा कारितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४०. ॐ ह्रीं वचसा कृतद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४१. ॐ ह्रीं वचसा कारितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः ५

४६. ॐ ह्रीं मनसा कृतद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४७. ॐ ह्रीं मनसा कारितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४९. ॐ ह्रीं वचसा कृतद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५०. ॐ ह्रीं वचसा कारितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

५१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

५२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

५३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

५४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः ६

५५. ॐ ह्रीं मनसा कृतत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

५६. ॐ ह्रीं मनसा कारितत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

५७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५८. ॐ ह्रीं वचसा कृतत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५९. ॐ ह्रीं वचसा कारितत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

६२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

६३.ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः ७

६४. ॐ ह्रीं मनसा कृतत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

६५. ॐ ह्रीं मनसा कारितत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

६६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

६७. ॐ ह्रीं वचसा कृतत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

६८. ॐ ह्रीं वचसा कारितत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

७१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

७२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः ८

७३. ॐ ह्रीं मनसा कृतचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

७४. ॐ ह्रीं मनसा कारितचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

७५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

७६. ॐ ह्रीं वचसा कृतचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७७. ॐ ह्रीं वचसा कारितचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

८१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य नवमः प्रकारः ९

८२. ॐ ह्रीं मनसा कृतचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

८३. ॐ ह्रीं मनसा कारितचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

८४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

८५. ॐ ह्रीं वचसा कृतचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८६. ॐ ह्रीं वचसा कारितचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

८७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य दशमः प्रकारः १०

९१. ॐ ह्रीं मनसा कृतासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

९२. ॐ ह्रीं मनसा कारितासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

९३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

९४. ॐ ह्रीं वचसा कृतासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९५. ॐ ह्रीं वचसा कारितासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

९६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

९७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य एकादशः प्रकारः ११

१००. ॐ ह्रीं मनसा कृतासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१०१. ॐ ह्रीं मनसा कारितासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१०२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१०३. ॐ ह्रीं वचसा कृतासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१०४. ॐ ह्रीं वचसा कारितासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१०५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१०६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१०७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१०८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य द्वादशः प्रकारः १२

१०९. ॐ ह्रीं मनसा कृतसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

११०. ॐ ह्रीं मनसा कारितसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१११. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

११२. ॐ ह्रीं वचसा कृतसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

११३. ॐ ह्रीं वचसा कारितसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

११४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

११५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

११६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

११७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य त्रयोदशः प्रकारः १३

११८. ॐ ह्रीं मनसा कृतसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

११९. ॐ ह्रीं मनसा कारितसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१२०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्त-हिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१२१. ॐ ह्रीं वचसा कृतसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१२२. ॐ ह्रीं वचसा कारितसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१२३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१२४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१२५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१२६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसा-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य चतुर्दशः प्रकारः १४

सत्य महाव्रत के ७२ मंत्र

१२७. ॐ ह्रीं मनसा कृतभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१२८. ॐ ह्रीं मनसा कारितभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१२९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१३०. ॐ ह्रीं वचसा कृतभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१३१. ॐ ह्रीं वचसा कारितभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१३२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१३३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१३४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१३५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति सत्यमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः १५

१३६. ॐ ह्रीं मनसा कृतईर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रताय नमः।।१।।

१३७. ॐ ह्रीं मनसा कारितईर्ष्यानिमित्तासत्यविरति-महाव्रताय नमः।।२।।

१३८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितईर्ष्यानिमित्तासत्यविरति-महाव्रताय नमः।।३।।

१३९. ॐ ह्रीं वचसा कृतईर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रताय नमः।।४।।

१४०. ॐ ह्रीं वचसा कारितईर्ष्यानिमित्तासत्यविरति-महाव्रताय नमः।।५।।

१४१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितईर्ष्यानिमित्तासत्यविरति-महाव्रताय नमः।।६।।

१४२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतईर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रताय नमः।।७।।

१४३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितईर्ष्यानिमित्तासत्यविरति-महाव्रताय नमः।।८।।

१४४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितईर्ष्यानिमित्तासत्यविरति-महाव्रताय नमः।।९।।

इति सत्यमहाव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः १६

१४५. ॐ ह्रीं मनसा कृतस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरति-महाव्रताय नमः।।१।।

१४६. ॐ ह्रीं मनसा कारितस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरति-महाव्रताय नमः।।२।।

१४७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरति-महाव्रताय नमः।।३।।

१४८. ॐ ह्रीं वचसा कृतस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरति-महाव्रताय नमः।।४।।

१४९. ॐ ह्रीं वचसा कारितस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरति-महाव्रताय नमः।।५।।

१५०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरति-महाव्रताय नमः।।६।।

१५१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरति-महाव्रताय नमः।।७।।

१५२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरति-महाव्रताय नमः।।८।।

१५३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरति-महाव्रताय नमः।।९।।

इति सत्यमहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः १७

१५४. ॐ ह्रीं मनसा कृतपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१५५. ॐ ह्रीं मनसा कारितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१५६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१५७. ॐ ह्रीं वचसा कृतपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१५८. ॐ ह्रीं वचसा कारितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१५९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१६०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१६१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१६२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति सत्यमहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः १८

१६३. ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१६४. ॐ ह्रीं मनसा कारितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१६५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१६६. ॐ ह्रीं वचसा कृतक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१६७. ॐ ह्रीं वचसा कारितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१६८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१६९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१७०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१७१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति सत्यमहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः १९

१७२. ॐ ह्रीं मनसा कृतलोभासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१७३. ॐ ह्रीं मनसा कारितलोभासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१७४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलोभासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१७५. ॐ ह्रीं वचसा कृतलोभासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१७६. ॐ ह्रीं वचसा कारितलोभासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१७७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितलोभासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१७८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतलोभासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१७९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितलोभासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१८०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितलोभासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति सत्यमहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः २०

१८१. ॐ ह्रीं मनसा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१८२. ॐ ह्रीं मनसा कारितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१८३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१८४. ॐ ह्रीं वचसा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१८५. ॐ ह्रीं वचसा कारितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१८६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१८७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१८८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१८९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति सत्यमहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः २१

१९०. ॐ ह्रीं मनसा कृतपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१९१. ॐ ह्रीं मनसा कारितपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१९२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१९३. ॐ ह्रीं वचसा कृतपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१९४. ॐ ह्रीं वचसा कारितपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१९५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१९६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१९७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१९८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति सत्यमहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः २२

अचौर्य महाव्रत के ७२ मंत्र

१९९. ॐ ह्रीं मनसा कृतग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२००. ॐ ह्रीं मनसा कारितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२०१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२०२. ॐ ह्रीं वचसा कृतग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२०३. ॐ ह्रीं वचसा कारितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२०४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२०५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२०६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२०७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः २३

२०८. ॐ ह्रीं मनसा कृतारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२०९. ॐ ह्रीं मनसा कारितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२१०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२११. ॐ ह्रीं वचसा कृतारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२१२. ॐ ह्रीं वचसा कारितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२१३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२१४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२१५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२१६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः २४

२१७. ॐ ह्रीं मनसा कृतखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२१८. ॐ ह्रीं मनसा कारितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२१९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२२०. ॐ ह्रीं वचसा कृतखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२२१. ॐ ह्रीं वचसा कारितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२२२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२२३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२२४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२२५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः २५

२२६. ॐ ह्रीं मनसा कृतैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२२७. ॐ ह्रीं मनसा कारितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२२८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२२९. ॐ ह्रीं वचसा कृतैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२३०. ॐ ह्रीं वचसा कारितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२३१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२३२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२३३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२३४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः २६

२३५. ॐ ह्रीं मनसा कृतान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२३६. ॐ ह्रीं मनसा कारितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२३७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२३८. ॐ ह्रीं वचसा कृतान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२३९. ॐ ह्रीं वचसा कारितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२४०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२४१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२४२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२४३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः २७

२४४. ॐ ह्रीं मनसा कृतउपधि-अदत्तग्रहणविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२४५. ॐ ह्रीं मनसा कारितउपधि-अदत्तग्रहणविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२४६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितउपधि-अदत्तग्रहणविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२४७. ॐ ह्रीं वचसा कृतउपधि-अदत्तग्रहणविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२४८. ॐ ह्रीं वचसा कारितउपधि-अदत्तग्रहणविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२४९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितउपधि-अदत्तग्रहणविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२५०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतउपधि-अदत्तग्रहणविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२५१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितउपधि-अदत्तग्रहणविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२५२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितउपधि-अदत्तग्रहणविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः २८

२५३. ॐ ह्रीं मनसा कृताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२५४. ॐ ह्रीं मनसा कारिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२५५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२५६. ॐ ह्रीं वचसा कृताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२५७. ॐ ह्रीं वचसा कारिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२५८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२५९. ॐ ह्रीं वपुषा कृताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२६०. ॐ ह्रीं वपुषा कारिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२६१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः २९

२६२. ॐ ह्रीं मनसा कृतापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२६३. ॐ ह्रीं मनसा कारितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२६४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२६५. ॐ ह्रीं वचसा कृतापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२६६. ॐ ह्रीं वचसा कारितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२६७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२६८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२६९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२७०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः ३०

ब्रह्मचर्य महाव्रत के १८० मंत्र

(यहाँ से पृ. ४६ से पृ. ६५ तक १८० मंत्रों को मुनि, श्रावक आदि पुरुषवर्ग जपें)

२७१. ॐ ह्रीं मनसा कृतनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२७२. ॐ ह्रीं मनसा कारितनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२७३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२७४. ॐ ह्रीं वचसा कृतनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२७५. ॐ ह्रीं वचसा कारितनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२७६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२७७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२७८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२७९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः ३१

केवल पुरुषवर्ग जपें—

२८०. ॐ ह्रीं मनसा कृतनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२८१. ॐ ह्रीं मनसा कारितनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२८२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२८३. ॐ ह्रीं वचसा कृतनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२८४. ॐ ह्रीं वचसा कारितनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२८५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२८६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२८७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२८८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः ३२

केवल पुरुषवर्ग जपें—

२८९. ॐ ह्रीं मनसा कृतनारीघ्राणेद्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२९०. ॐ ह्रीं मनसा कारितनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२९१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२९२. ॐ ह्रीं वचसा कृतनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२९३. ॐ ह्रीं वचसा कारितनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२९४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२९५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२९६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२९७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः ३३

केवल पुरुषवर्ग जपें—

२९८. ॐ ह्रीं मनसा कृतनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२९९. ॐ ह्रीं मनसा कारितनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३००. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३०१. ॐ ह्रीं वचसा कृतनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३०२. ॐ ह्रीं वचसा कारितनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३०३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३०४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३०५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३०६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः ३४

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३०७. ॐ ह्रीं मनसा कृतनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३०८. ॐ ह्रीं मनसा कारितनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३०९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३१०. ॐ ह्रीं वचसा कृतनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३११. ॐ ह्रीं वचसा कारितनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३१२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३१३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३१४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३१५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः ३५

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३१६. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३१७. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३१८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३१९. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३२०. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३२१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३२२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३२३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३२४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः ३६

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३२५. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३२६. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३२७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३२८. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३२९. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३३०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३३१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३३२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३३३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः ३७

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३३४. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३३५. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३३६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३३७. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३३८. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३३९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३४०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३४१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३४२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः ३८

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३४३. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३४४. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३४५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३४६. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३४७. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३४८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३४९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३५०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३५१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य नवमः प्रकारः ३९

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३५२. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३५३. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३५४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३५५. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३५६. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३५७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३५८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३५९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३६०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य दशमः प्रकारः ४०

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३६१. ॐ ह्रीं मनसा कृततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३६२. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३६३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३६४. ॐ ह्रीं वचसा कृततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३६५. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३६६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३६७. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३६८. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३६९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यैकादशः प्रकारः ४१

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३७०. ॐ ह्रीं मनसा कृततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३७१. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३७२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिरश्चीरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३७३. ॐ ह्रीं वचसा कृततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३७४. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३७५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिरश्चीरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३७६. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३७७. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३७८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिरश्चीरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य द्वादशः प्रकारः ४२

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३७९. ॐ ह्रीं मनसा कृततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३८०. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३८१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३८२. ॐ ह्रीं वचसा कृततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३८३. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३८४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३८५. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३८६. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३८७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य त्रयोदशः प्रकारः ४३

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३८८. ॐ ह्रीं मनसा कृततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३८९. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३९०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३९१. ॐ ह्रीं वचसा कृततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३९२. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३९३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३९४. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३९५. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३९६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य चतुर्दशः प्रकारः ४४

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३९७. ॐ ह्रीं मनसा कृततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३९८. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३९९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४००. ॐ ह्रीं वचसा कृततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४०१. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४०२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४०३. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४०४. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४०५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य पंचदशः प्रकारः ४५

केवल पुरुषवर्ग जपें—

४०६. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४०७. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४०८.ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४०९. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४१०. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४११. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४१२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४१३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४१४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य षोडशः प्रकारः ४६

केवल पुरुषवर्ग जपें—

४१५. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४१६. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४१७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४१८. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४१९. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४२०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४२१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४२२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४२३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य सप्तदशः प्रकारः ४७

केवल पुरुषवर्ग जपें—

४२४. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४२५. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४२६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४२७. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४२८. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४२९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४३०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४३१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४३२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्याष्टादशः प्रकारः ४८

केवल पुरुषवर्ग जपें—

४३३. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४३४. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४३५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४३६. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४३७. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४३८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४३९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४४०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४४१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यैकोनविंशः प्रकारः ४९

केवल पुरुषवर्ग जपें—

४४२. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४४३. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४४४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४४५. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४४६. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४४७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४४८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४४९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४५०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य विंशतितमः प्रकारः ५०

(आर्यिकाएं, श्राविकाएं आदि महिलाएँ पृ. ६६ से पृ. ८५ तक इन १८० मंत्रों को जपें)

२७१. ॐ ह्रीं मनसा कृतपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२७२. ॐ ह्रीं मनसा कारितपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२७३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२७४. ॐ ह्रीं वचसा कृतपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२७५. ॐ ह्रीं वचसा कारितपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२७६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२७७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२७८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२७९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः १

केवल महिलाएँ जपें—

२८०. ॐ ह्रीं मनसा कृतपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२८१. ॐ ह्रीं मनसा कारितपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२८२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२८३. ॐ ह्रीं वचसा कृतपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२८४. ॐ ह्रीं वचसा कारितपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२८५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२८६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२८७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२८८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः २

केवल महिलाएँ जपें—

२८९. ॐ ह्रीं मनसा कृतपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२९०. ॐ ह्रीं मनसा कारितपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

२९१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

२९२. ॐ ह्रीं वचसा कृतपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

२९३. ॐ ह्रीं वचसा कारितपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

२९४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२९५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२९६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

२९७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः ३

केवल महिलाएँ जपें—

२९८. ॐ ह्रीं मनसा कृतपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२९९. ॐ ह्रीं मनसा कारितपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३००. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३०१. ॐ ह्रीं वचसा कृतपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३०२. ॐ ह्रीं वचसा कारितपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३०३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३०४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३०५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३०६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः ४

केवल महिलाएँ जपें—

३०७. ॐ ह्रीं मनसा कृतपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३०८. ॐ ह्रीं मनसा कारितपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३०९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३१०. ॐ ह्रीं वचसा कृतपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३११. ॐ ह्रीं वचसा कारितपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३१२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३१३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३१४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३१५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः ५

केवल महिलाएँ जपें—

३१६. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३१७. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३१८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३१९. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३२०. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३२१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३२२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३२३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३२४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः ६

केवल महिलाएँ जपें—

३२५. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३२६. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३२७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३२८. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३२९. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३३०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३३१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३३२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३३३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः ७

केवल महिलाएँ जपें—

३३४. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३३५. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३३६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३३७. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३३८. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३३९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३४०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३४१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३४२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः ८

केवल महिलाएँ जपें—

३४३. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३४४. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३४५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३४६. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३४७. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३४८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३४९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३५०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३५१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य नवमः प्रकारः ९

केवल महिलाएँ जपें—

३५२. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३५३. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३५४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३५५. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३५६. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३५७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३५८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३५९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३६०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य दशमः प्रकारः १०

केवल महिलाएँ जपें—

३६१. ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३६२. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३६३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३६४. ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३६५. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३६६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३६७. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३६८. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३६९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यैकादशः प्रकारः ११

केवल महिलाएँ जपें—

३७०.ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३७४. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३७२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३७३. ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३७४. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३७५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३७६. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३७७. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३७८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य द्वादशः प्रकारः १२

केवल महिलाएँ जपें—

३७९. ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्यग्घ्राणेद्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३८०. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३८१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३८२. ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३८३. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३८४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३८५. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३८६. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३८७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य त्रयोदशः प्रकारः १३

केवल महिलाएँ जपें—

३८८. ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३८९. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३९०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

३९१. ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

३९२. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

३९३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

३९४. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३९५. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

३९६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य चतुर्दशः प्रकारः १४

केवल महिलाएँ जपें—

३९७. ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

३९८. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३९९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४००. ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४०१. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४०२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४०३. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४०४. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४०५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य पंचदशः प्रकारः १५

केवल महिलाएँ जपें—

४०६. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४०७. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४०८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४०९. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४१०. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४११. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४१२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४१३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४१४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य षोडशः प्रकारः १६

केवल महिलाएँ जपें—

४१५. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४१६. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४१७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४१८. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४१९. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४२०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४२१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४२२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४२३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य सप्तदशः प्रकारः १७

केवल महिलाएँ जपें—

४२४. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तपुरुषघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४२५. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४२६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४२७. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४२८. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४२९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४३०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४३१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४३२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्याष्टादशः प्रकारः १८

केवल महिलाएँ जपें—

४३३. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४३४. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४३५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४३६. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४३७. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४३८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४३९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४४०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४४१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यैकोनविंशः प्रकारः १९

केवल महिलाएँ जपें—

४४२. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४४३. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४४४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४४५. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४४६. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४४७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४४८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४४९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४५०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषया-ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य विंशतितमः प्रकारः २०

अपरिग्रह महाव्रत के २१६ मंत्र

४५१. ॐ ह्रीं मनसा कृतमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४५२. ॐ ह्रीं मनसा कारितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४५३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४५४. ॐ ह्रीं वचसा कृतमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४५५. ॐ ह्रीं वचसा कारितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४५६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रह-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४५७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४५८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४५९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रह-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः ५१

४६०. ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४६१. ॐ ह्रीं मनसा कारितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४६२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४६३. ॐ ह्रीं वचसा कृतक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४६४. ॐ ह्रीं वचसा कारितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४६५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४६६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४६७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४६८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः ५२

४६९. ॐ ह्रीं मनसा कृतमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४७०. ॐ ह्रीं मनसा कारितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४७१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४७२. ॐ ह्रीं वचसा कृतमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४७३. ॐ ह्रीं वचसा कारितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४७४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४७५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमानाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४७६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४७७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः ५३

४७८. ॐ ह्रीं मनसा कृतमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४७९. ॐ ह्रीं मनसा कारितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४८०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४८१. ॐ ह्रीं वचसा कृतमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४८२. ॐ ह्रीं वचसा कारितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४८३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४८४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४८५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४८६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः ५४

४८७. ॐ ह्रीं मनसा कृतलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४८८. ॐ ह्रीं मनसा कारितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४८९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४९०. ॐ ह्रीं वचसा कृतलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

४९१. ॐ ह्रीं वचसा कारितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४९२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

४९३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४९४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

४९५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः ५५

४९६. ॐ ह्रीं मनसा कृतहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

४९७. ॐ ह्रीं मनसा कारितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४९८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४९९. ॐ ह्रीं वचसा कृतहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५००. ॐ ह्रीं वचसा कारितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

५०१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

५०२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

५०३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

५०४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः ५६

५०५. ॐ ह्रीं मनसा कृतरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

५०६. ॐ ह्रीं मनसा कारितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

५०७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५०८. ॐ ह्रीं वचसा कृतरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५०९. ॐ ह्रीं वचसा कारितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

५१०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

५११. ॐ ह्रीं वपुषा कृतरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

५१२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

५१३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः ५७

५१४. ॐ ह्रीं मनसा कृताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

५१५. ॐ ह्रीं मनसा कारिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

५१६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५१७. ॐ ह्रीं वचसा कृताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५१८. ॐ ह्रीं वचसा कारिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

५१९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

५२०. ॐ ह्रीं वपुषा कृताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

५२१. ॐ ह्रीं वपुषा कारिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

५२२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः ५८

५२३. ॐ ह्रीं मनसा कृतशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

५२४. ॐ ह्रीं मनसा कारितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

५२५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५२६. ॐ ह्रीं वचसा कृतशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५२७. ॐ ह्रीं वचसा कारितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा-व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

५२८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

५२९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

५३०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

५३१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्यः नवमः प्रकारः ५९

५३२. ॐ ह्रीं मनसा कृतभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

५३३. ॐ ह्रीं मनसा कारितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

५३४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५३५. ॐ ह्रीं वचसा कृतभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५३६. ॐ ह्रीं वचसा कारितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

५३७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

५३८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

५३९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

५४०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य: दशम: प्रकार: ६०

५४१. ॐ ह्रीं मनसा कृतजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा-व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

५४२. ॐ ह्रीं मनसा कारितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

५४३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५४४. ॐ ह्रीं वचसा कृतजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा-व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५४५. ॐ ह्रीं वचसा कारितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

५४६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

५४७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

५४८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

५४९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्यैकादश: प्रकार: ६१

५५०. ॐ ह्रीं मनसा कृतस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

५५१. ॐ ह्रीं मनसा कारितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

५५२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५५३. ॐ ह्रीं वचसा कृतस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५५४. ॐ ह्रीं वचसा कारितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

५५५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

५५६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

५५७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

५५८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य द्वादशः प्रकारः ६२

५५९. ॐ ह्रीं मनसा कृतपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

५६०. ॐ ह्रीं मनसा कारितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

५६१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५६२. ॐ ह्रीं वचसा कृतपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५६३. ॐ ह्रीं वचसा कारितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

५६४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

५६५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

५६६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

५६७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य त्रयोदशः प्रकारः ६३

५६८. ॐ ह्रीं मनसा कृतनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

५६९. ॐ ह्रीं मनसा कारितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रह-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

५७०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रह-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५७१. ॐ ह्रीं वचसा कृतनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५७२. ॐ ह्रीं वचसा कारितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रह-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

५७३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रह-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

५७४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

५७५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

५७६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रह-विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य चतुर्दशः प्रकारः ६४

५७७. ॐ ह्रीं मनसा कृतद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

५७८. ॐ ह्रीं मनसा कारितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

५७९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५८०. ॐ ह्रीं वचसा कृतद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५८१. ॐ ह्रीं वचसा कारितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

५८२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

५८३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

५८४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

५८५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य पंचदशः प्रकारः ६५

५८६. ॐ ह्रीं मनसा कृतचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

५८७. ॐ ह्रीं मनसा कारितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

५८८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५८९. ॐ ह्रीं वचसा कृतचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५९०. ॐ ह्रीं वचसा कारितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

५९१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

५९२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

५९३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

५९४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य षोडशः प्रकारः ६६

५९५. ॐ ह्रीं मनसा कृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

५९६. ॐ ह्रीं मनसा कारितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

५९७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५९८. ॐ ह्रीं वचसा कृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५९९. ॐ ह्रीं वचसा कारितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६००. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६०१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

६०२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

६०३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य सप्तदशः प्रकारः ६७

६०४. ॐ ह्रीं मनसा कृतधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

६०५. ॐ ह्रीं मनसा कारितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

६०६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

६०७. ॐ ह्रीं वचसा कृतधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

६०८. ॐ ह्रीं वचसा कारितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६०९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६१०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

६११. ॐ ह्रीं वपुषा कारितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

६१२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य अष्टादशः प्रकारः ६८

६१३. ॐ ह्रीं मनसा कृतकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

६१४. ॐ ह्रीं मनसा कारितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

६१५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

६१६. ॐ ह्रीं वचसा कृतकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

६१७. ॐ ह्रीं वचसा कारितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६१८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६१९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

६२०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

६२१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्यैकोनविंशः प्रकारः ६९

६२२. ॐ ह्रीं मनसा कृतभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

६२३. ॐ ह्रीं मनसा कारितभांडबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

६२४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितभांडबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

६२५. ॐ ह्रीं वचसा कृतभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

६२६. ॐ ह्रीं वचसा कारितभांडबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६२७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितभांडबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६२८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

६२९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

६३०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितभांडबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य विंशतिमः प्रकारः ७०

६३१. ॐ ह्रीं मनसा कृतधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

६३२. ॐ ह्रीं मनसा कारितधान्यबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

६३३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधान्यबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

६३४. ॐ ह्रीं वचसा कृतधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

६३५. ॐ ह्रीं वचसा कारितधान्यबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६३६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधान्यबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६३७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

६३८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितधान्यबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

६३९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितधान्यबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्यैकविंशः प्रकारः ७१

६४०. ॐ ह्रीं मनसा कृतयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

६४१. ॐ ह्रीं मनसा कारितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

६४२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितयानबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

६४३. ॐ ह्रीं वचसा कृतयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

६४४. ॐ ह्रीं वचसा कारितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६४५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितयानबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६४६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

६४७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

६४८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य द्वाविंशः प्रकारः ७२

६४९. ॐ ह्रीं मनसा कृतशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

६५०. ॐ ह्रीं मनसा कारितशयनबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

६५१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितशयनबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

६५२. ॐ ह्रीं वचसा कृतशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

६५३. ॐ ह्रीं वचसा कारितशयनबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६५४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितशयनबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६५५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

६५६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितशयनबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

६५७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितशयनबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य त्रयोविंशः प्रकारः ७३

६५८. ॐ ह्रीं मनसा कृतासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

६५९. ॐ ह्रीं मनसा कारितासनबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

६६०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा-व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

६६१. ॐ ह्रीं वचसा कृतासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

६६२. ॐ ह्रीं वचसा कारितासनबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६६३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितासनबाह्यपरिग्रहविरति-महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६६४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

६६५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

६६६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य चतुर्विंशः प्रकारः ७४

रात्रिभोजन त्याग अणुव्रत के १० मंत्र

६६७. ॐ ह्रीं मनसा कृतरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

६६८. ॐ ह्रीं मनसा कारितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

६६९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

६७०. ॐ ह्रीं वचसा कृतरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

६७१. ॐ ह्रीं वचसा कारितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६७२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६७३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

६७४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

६७५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

६७६. ॐ ह्रीं अनिच्छा-रात्रिभोजनविरत्यणुव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१०।।

इति रात्रिभोजनविरतिअणुव्रतस्य प्रकारः ७५

ईर्यासमिति के ९ मंत्र

६७७. ॐ ह्रीं मनसा कृतेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

६७८. ॐ ह्रीं मनसा कारितेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

६७९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

६८०. ॐ ह्रीं वचसा कृतेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

६८१. ॐ ह्रीं वचसा कारितेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६८२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६८३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

६८४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

६८५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ईर्यासमितिचारित्रस्य प्रकारः ७६

भाषासमिति के ९० मंत्र

६८६. ॐ ह्रीं मनसा कृतभावसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

६८७. ॐ ह्रीं मनसा कारितभावसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

६८८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितभावसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

६८९. ॐ ह्रीं वचसा कृतभावसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

६९०. ॐ ह्रीं वचसा कारितभावसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६९१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितभावसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६९२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतभावसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

६९३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितभावसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

६९४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितभावसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य प्रथमः प्रकारः ७७

६९५. ॐ ह्रीं मनसा कृतोपमासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

६९६. ॐ ह्रीं मनसा कारितोपमासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

६९७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितोपमासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

६९८. ॐ ह्रीं वचसा कृतोपमासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

६९९. ॐ ह्रीं वचसा कारितोपमासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७००. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितोपमासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७०१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतोपमासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

७०२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितोपमासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

७०३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितोपमासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य द्वितीयः प्रकारः ७८

७०४. ॐ ह्रीं मनसा कृतव्यवहारसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

७०५. ॐ ह्रीं मनसा कारितव्यवहारसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

७०६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितव्यवहारसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

७०७. ॐ ह्रीं वचसा कृतव्यवहारसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७०८. ॐ ह्रीं वचसा कारितव्यवहारसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७०९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितव्यवहारसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७१०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतव्यवहारसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

७११. ॐ ह्रीं वपुषा कारितव्यवहारसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

७१२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितव्यवहारसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य तृतीयः प्रकारः ७९

७१३. ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रतीतसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

७१४. ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रतीतसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

७१५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रतीतसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

७१६. ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रतीतसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७१७. ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रतीतसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७१८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रतीतसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७१९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रतीतसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

७२०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रतीतसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

७२१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रतीतसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य चतुर्थः प्रकारः ८०

७२२. ॐ ह्रीं मनसा कृतसंभावनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

७२३. ॐ ह्रीं मनसा कारितसंभावनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

७२४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंभावनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

७२५. ॐ ह्रीं वचसा कृतसंभावनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७२६. ॐ ह्रीं वचसा कारितसंभावनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७२७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंभावनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७२८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंभावनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

७२९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंभावनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

७३०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंभावनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य पंचमः प्रकारः ८१

७३१. ॐ ह्रीं मनसा कृतजनपदसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

७३२. ॐ ह्रीं मनसा कारितजनपदसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

७३३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितजनपदसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

७३४. ॐ ह्रीं वचसा कृतजनपदसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७३५. ॐ ह्रीं वचसा कारितजनपदसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७३६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितजनपदसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७३७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतजनपदसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

७३८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितजनपदसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

७३९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितजनपदसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य षष्ठः प्रकारः ८२

७४०. ॐ ह्रीं मनसा कृतसंवृतिसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

७४१. ॐ ह्रीं मनसा कारितसंवृतिसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

७४२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंवृतिसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

७४३. ॐ ह्रीं वचसा कृतसंवृतिसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७४४. ॐ ह्रीं वचसा कारितसंवृतिसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७४५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंवृतिसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७४६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंवृतिसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

७४७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंवृतिसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

७४८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंवृतिसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य सप्तमः प्रकारः ८३

७४९. ॐ ह्रीं मनसा कृतनामसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

७५०. ॐ ह्रीं मनसा कारितनामसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

७५१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनामसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

७५२. ॐ ह्रीं वचसा कृतनामसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७५३. ॐ ह्रीं वचसा कारितनामसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७५४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनामसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७५५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनामसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

७५६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनामसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

७५७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनामसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्याष्टमः प्रकारः ८४

७५८. ॐ ह्रीं मनसा कृतस्थापनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

७५९. ॐ ह्रीं मनसा कारितस्थापनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

७६०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितस्थापनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

७६१. ॐ ह्रीं वचसा कृतस्थापनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७६२. ॐ ह्रीं वचसा कारितस्थापनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७६३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितस्थापनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७६४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतस्थापनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

७६५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितस्थापनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

७६६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितस्थापनासत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य नवमः प्रकारः ८५

७६७. ॐ ह्रीं मनसा कृतरूपसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

७६८. ॐ ह्रीं मनसा कारितरूपसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

७६९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितरूपसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

७७०. ॐ ह्रीं वचसा कृतरूपसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७७१. ॐ ह्रीं वचसा कारितरूपसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७७२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितरूपसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७७३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतरूपसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

७७४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितरूपसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

७७५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितरूपसत्यभाषासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य दशमः प्रकारः ८६

एषणा समिति के ४१४ मंत्र

७७६. ॐ ह्रीं मनसा कृतधात्रीदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

७७७. ॐ ह्रीं मनसा कारितधात्रीदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

७७८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधात्रीदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

७७९. ॐ ह्रीं वचसा कृतधात्रीदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७८०. ॐ ह्रीं वचसा कारितधात्रीदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७८१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधात्रीदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७८२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतधात्रीदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

७८३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितधात्रीदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

७८४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितधात्रीदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति धात्रीदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य प्रथमः प्रकारः ८७

७८५. ॐ ह्रीं मनसा कृतदूतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

७८६. ॐ ह्रीं मनसा कारितदूतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

७८७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदूतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

७८८. ॐ ह्रीं वचसा कृतदूतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७८९. ॐ ह्रीं वचसा कारितदूतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७९०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदूतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७९१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदूतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

७९२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदूतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

७९३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदूतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति दूतदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य द्वितीयः प्रकारः ८८

७९४. ॐ ह्रीं मनसा कृतनिमित्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

७९५. ॐ ह्रीं मनसा कारितनिमित्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

७९६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनिमित्तदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

७९७. ॐ ह्रीं वचसा कृतनिमित्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७९८. ॐ ह्रीं वचसा कारितनिमित्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

७९९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनिमित्तदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८००. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनिमित्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८०१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनिमित्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

८०२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनिमित्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति निमित्तदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य तृतीयः प्रकारः ८९

८०३. ॐ ह्रीं मनसा कृताऽजीवकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

८०४. ॐ ह्रीं मनसा कारिताऽजीवकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

८०५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिताऽजीवकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

८०६. ॐ ह्रीं वचसा कृताऽजीवकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८०७. ॐ ह्रीं वचसा कारिताऽजीवकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

८०८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिताऽजीवकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८०९. ॐ ह्रीं वपुषा कृताऽजीवकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८१०. ॐ ह्रीं वपुषा कारिताऽजीवकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

८११. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिताऽजीवकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति आजीवनदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य चतुर्थः प्रकारः ९०

८१२. ॐ ह्रीं मनसा कृतवनीपकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

८१३. ॐ ह्रीं मनसा कारितवनीपकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

८१४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितवनीपकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

८१५. ॐ ह्रीं वचसा कृतवनीपकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८१६. ॐ ह्रीं वचसा कारितवनीपकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

८१७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितवनीपकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८१८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतवनीपकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८१९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितवनीपकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

८२०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितवनीपकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति वनीपकदोषरहितैषणासमिति चारित्रस्य पंचमः प्रकारः ९१

८२१. ॐ ह्रीं मनसा कृतचिकित्सादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

८२२. ॐ ह्रीं मनसा कारितचिकित्सादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

८२३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचिकित्सादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

८२४. ॐ ह्रीं वचसा कृतचिकित्सादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८२५. ॐ ह्रीं वचसा कारितचिकित्सादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

८२६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचिकित्सादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८२७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतचिकित्सादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८२८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितचिकित्सादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

८२९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचिकित्सादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति चिकित्सादोषरहितैषणासमिति चारित्रस्य षष्ठः प्रकारः ९२

८३०. ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रोधदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

८३१. ॐ ह्रीं मनसा कारितक्रोधदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

८३२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रोधदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

८३३. ॐ ह्रीं वचसा कृतक्रोधदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८३४. ॐ ह्रीं वचसा कारितक्रोधदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

८३५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्रोधदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८३६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्रोधदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८३७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्रोधदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

८३८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्रोधदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति क्रोधदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य सप्तमः प्रकारः ९३

८३९. ॐ ह्रीं मनसा कृतमानदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

८४०. ॐ ह्रीं मनसा कारितमानदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

८४१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमानदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

८४२. ॐ ह्रीं वचसा कृतमानदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८४३. ॐ ह्रीं वचसा कारितमानदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

८४४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमानदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८४५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमानदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८४६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमानदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

८४७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमानदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मानदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य अष्टमः प्रकारः ९४

८४८. ॐ ह्रीं मनसा कृतमायादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

८४९. ॐ ह्रीं मनसा कारितमायादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

८५०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमायादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

८५१. ॐ ह्रीं वचसा कृतमायादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८५२. ॐ ह्रीं वचसा कारितमायादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

८५३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमायादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८५४.ॐ ह्रीं वपुषा कृतमायादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८५५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमायादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

८५६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमायादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मायादोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य नवमः प्रकारः ९५

८५७. ॐ ह्रीं मनसा कृतलोभदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

८५८. ॐ ह्रीं मनसा कारितलोभदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

८५९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलोभदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

८६०. ॐ ह्रीं वचसा कृतलोभदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८६१. ॐ ह्रीं वचसा कारितलोभदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

८६२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितलोभदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८६३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतलोभदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८६४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितलोभदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

८६५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितलोभदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति लोभदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य दशमः प्रकारः ९६

८६६. ॐ ह्रीं मनसा कृतपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

८६७. ॐ ह्रीं मनसा कारितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

८६८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

८६९. ॐ ह्रीं वचसा कृतपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८७०. ॐ ह्रीं वचसा कारितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

८७१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८७२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८७३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

८७४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति पूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य एकादशः प्रकारः ९७

८७५. ॐ ह्रीं मनसा कृतपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

८७६. ॐ ह्रीं मनसा कारितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

८७७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

८७८. ॐ ह्रीं वचसा कृतपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८७९. ॐ ह्रीं वचसा कारितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

८८०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८८१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८८२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

८८३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति पश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य द्वादशः प्रकारः ९८

८८४. ॐ ह्रीं मनसा कृतविद्यादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

८८५. ॐ ह्रीं मनसा कारितविद्यादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

८८६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितविद्यादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

८८७. ॐ ह्रीं वचसा कृतविद्यादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८८८. ॐ ह्रीं वचसा कारितविद्यादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

८८९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितविद्यादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८९०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतविद्यादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८९१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितविद्यादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

८९२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितविद्यादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति विद्यादोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य त्रयोदशः प्रकारः ९९

८९३. ॐ ह्रीं मनसा कृतमंत्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

८९४. ॐ ह्रीं मनसा कारितमंत्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

८९५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमंत्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

८९६. ॐ ह्रीं वचसा कृतमंत्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८९७. ॐ ह्रीं वचसा कारितमंत्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

८९८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमंत्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

८९९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमंत्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९००. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमंत्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९०१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमंत्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मंत्रदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य चतुर्दशः प्रकारः १००

९०२. ॐ ह्रीं मनसा कृतचूर्णदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

९०३. ॐ ह्रीं मनसा कारितचूर्णदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

९०४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचूर्णदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

९०५. ॐ ह्रीं वचसा कृतचूर्णदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९०६. ॐ ह्रीं वचसा कारितचूर्णदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

९०७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचूर्णदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

९०८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतचूर्णदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९०९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितचूर्णदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९१०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचूर्णदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति चूर्णदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य पंचदशः प्रकारः १०१

९११. ॐ ह्रीं मनसा कृतमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

९१२. ॐ ह्रीं मनसा कारितमूलकर्म्मदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

९१३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमूलकर्म्मदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

९१४. ॐ ह्रीं वचसा कृतमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९१५. ॐ ह्रीं वचसा कारितमूलकर्म्मदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

९१६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमूलकर्म्मदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

९१७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९१८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमूलकर्म्मदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९१९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमूलकर्म्मदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मूलकर्म्मदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य षोडशः प्रकारः १०२

९२०. ॐ ह्रीं मनसा कृतशंकितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

९२१. ॐ ह्रीं मनसा कारितशंकितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

९२२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितशंकितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

९२३. ॐ ह्रीं वचसा कृतशंकितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९२४. ॐ ह्रीं वचसा कारितशंकितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

९२५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितशंकितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

९२६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतशंकितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९२७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितशंकितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९२८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितशंकितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति शंकितदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य सप्तदशः प्रकारः १०३

९२९. ॐ ह्रीं मनसा कृतम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

९३०. ॐ ह्रीं मनसा कारितम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

९३१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

९३२. ॐ ह्रीं वचसा कृतम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९३३. ॐ ह्रीं वचसा कारितम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

९३४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

९३५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९३६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९३७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति म्रक्षितदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य अष्टदशः प्रकारः १०४

९३८. ॐ ह्रीं मनसा कृतनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

९३९. ॐ ह्रीं मनसा कारितनिक्षिप्तदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

९४०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनिक्षिप्तदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

९४१. ॐ ह्रीं वचसा कृतनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९४२. ॐ ह्रीं वचसा कारितनिक्षिप्तदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

९४३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनिक्षिप्तदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

९४४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९४५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनिक्षिप्तदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९४६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनिक्षिप्तदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति निक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य एकोनविंशः प्रकारः १०५

९४७. ॐ ह्रीं मनसा कृतपिहितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

९४८. ॐ ह्रीं मनसा कारितपिहितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

९४९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपिहितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

९५०. ॐ ह्रीं वचसा कृतपिहितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९५१. ॐ ह्रीं वचसा कारितपिहितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

९५२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपिहितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

९५३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपिहितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९५४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपिहितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९५५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपिहितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति पिहितदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
विंशतितमः प्रकारः १०६

९५६. ॐ ह्रीं मनसा कृतसंव्यवहरणदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

९५७. ॐ ह्रीं मनसा कारितसंव्यवहरणदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

९५८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंव्यवहरणदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

९५९. ॐ ह्रीं वचसा कृतसंव्यवहरणदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९६०. ॐ ह्रीं वचसा कारितसंव्यवहरणदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

९६१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंव्यवहरणदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

९६२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंव्यवहरणदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९६३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंव्यवहरणदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९६४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंव्यवहरणदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति व्यवहरणदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
एकविंशः प्रकारः १०७

९६५. ॐ ह्रीं मनसा कृतदायकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

९६६. ॐ ह्रीं मनसा कारितदायकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

९६७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदायकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

९६८. ॐ ह्रीं वचसा कृतदायकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९६९. ॐ ह्रीं वचसा कारितदायकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

९७०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदायकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

९७१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदायकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९७२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदायकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९७३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदायकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति दायकदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
द्वाविंशः प्रकारः १०८

९७४. ॐ ह्रीं मनसा कृतोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

९७५. ॐ ह्रीं मनसा कारितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

९७६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

९७७. ॐ ह्रीं वचसा कृतोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९७८. ॐ ह्रीं वचसा कारितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

९७९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

९८०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९८१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९८२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति उन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
त्रयोविंशतितमः प्रकारः १०९

९८३. ॐ ह्रीं मनसा कृतापरिणतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

९८४. ॐ ह्रीं मनसा कारितापरिणतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

९८५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितापरिणतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

९८६. ॐ ह्रीं वचसा कृतापरिणतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९८७. ॐ ह्रीं वचसा कारितापरिणतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

९८८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितापरिणतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

९८९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतापरिणतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९९०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितापरिणतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९९१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितापरिणतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिणतदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
चतुर्विंशतितमः प्रकारः ११०

९९२. ॐ ह्रीं मनसा कृतलिप्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

९९३. ॐ ह्रीं मनसा कारितलिप्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

९९४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलिप्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

९९५. ॐ ह्रीं वचसा कृतलिप्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९९६. ॐ ह्रीं वचसा कारितलिप्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

९९७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितलिप्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

९९८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतलिप्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

९९९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितलिप्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१०००. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितलिप्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति लिप्तदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
पंचविंशतितमः प्रकारः १११

१००१. ॐ ह्रीं मनसा कृतछोटितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१००२. ॐ ह्रीं मनसा कारितछोटितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१००३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितछोटितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१००४. ॐ ह्रीं वचसा कृतछोटितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१००५. ॐ ह्रीं वचसा कारितछोटितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१००६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितछोटितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१००७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतछोटितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१००८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितछोटितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१००९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितछोटितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति छोटितदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
षड्विंशतितमः प्रकारः ११२

१०१०. ॐ ह्रीं मनसा कृतौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१०११. ॐ ह्रीं मनसा कारितौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१०१२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितौद्देशिकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१०१३. ॐ ह्रीं वचसा कृतौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१०१४. ॐ ह्रीं वचसा कारितौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१०१५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितौद्देशिकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१०१६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१०१७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१०१८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितौद्देशिकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इत्यौद्देशिकदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
सप्तविंशतितमः प्रकारः ११३

१०१९. ॐ ह्रीं मनसा कृतअध्यधिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१०२०. ॐ ह्रीं मनसा कारितअध्यधिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१०२१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअध्यधिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१०२२. ॐ ह्रीं वचसा कृतअध्यधिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१०२३. ॐ ह्रीं वचसा कारितअध्यधिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१०२४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअध्यधिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१०२५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअध्यधिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१०२६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअध्यधिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१०२७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअध्यधिदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अध्यधिदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
अष्टाविंशतितमः प्रकारः ११४

१०२८. ॐ ह्रीं मनसा कृतपूतिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१०२९. ॐ ह्रीं मनसा कारितपूतिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१०३०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपूतिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१०३१. ॐ ह्रीं वचसा कृतपूतिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१०३२. ॐ ह्रीं वचसा कारितपूतिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१०३३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपूतिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१०३४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपूतिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१०३५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपूतिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१०३६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपूतिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति पूतिदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
ऊनत्रिंशत्तमः प्रकारः ११५

१०३७. ॐ ह्रीं मनसा कृतप्राभृतिकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१०३८. ॐ ह्रीं मनसा कारितप्राभृतिकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१०३९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्राभृतिकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१०४०. ॐ ह्रीं वचसा कृतप्राभृतिकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१०४१. ॐ ह्रीं वचसा कारितप्राभृतिकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१०४२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्राभृतिकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१०४३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्राभृतिकदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१०४४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्राभृतिकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१०४५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्राभृतिकदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति प्राभृतिकदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
त्रिंशत्तमः प्रकारः ११६

१०४६. ॐ ह्रीं मनसा कृतमिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१०४७. ॐ ह्रीं मनसा कारितमिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१०४८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१०४९. ॐ ह्रीं वचसा कृतमिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१०५०. ॐ ह्रीं वचसा कारितमिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१०५१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१०५२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१०५३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१०५४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमिश्रदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मिश्रदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
एकत्रिंशत्तमः प्रकारः ११७

१०५५. ॐ ह्रीं मनसा कृतबलिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१०५६. ॐ ह्रीं मनसा कारितबलिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१०५७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितबलिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१०५८. ॐ ह्रीं वचसा कृतबलिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१०५९. ॐ ह्रीं वचसा कारितबलिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१०६०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितबलिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१०६१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतबलिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१०६२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितबलिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१०६३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितबलिदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति बलिदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
द्वात्रिंशत्तमः प्रकारः ११८

१०६४. ॐ ह्रीं मनसा कृतन्यस्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१०६५. ॐ ह्रीं मनसा कारितन्यस्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१०६६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितन्यस्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१०६७. ॐ ह्रीं वचसा कृतन्यस्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१०६८. ॐ ह्रीं वचसा कारितन्यस्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१०६९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितन्यस्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१०७०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतन्यस्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१०७१.ॐ ह्रीं वपुषा कारितन्यस्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१०७२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितन्यस्तदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति न्यस्तदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
त्रयस्त्रिंशत्तमः प्रकारः ११९

१०७३. ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१०७४. ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१०७५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१०७६. ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१०७७. ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१०७८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१०७९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१०८०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१०८१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति प्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
चतुस्त्रिंशत्तमः प्रकारः १२०

१०८२. ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रीतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१०८३. ॐ ह्रीं मनसा कारितक्रीतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१०८४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रीतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१०८५. ॐ ह्रीं वचसा कृतक्रीतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१०८६. ॐ ह्रीं वचसा कारितक्रीतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१०८७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्रीतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१०८८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्रीतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१०८९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्रीतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१०९०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्रीतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति क्रीतदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
पंचत्रिंशत्तमः प्रकारः १२१

१०९१. ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रामित्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१०९२. ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रामित्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१०९३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रामित्यदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१०९४. ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रामित्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१०९५. ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रामित्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१०९६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रामित्यदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१०९७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रामित्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१०९८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रामित्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१०९९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रामित्यदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति प्रामित्यदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
षट्त्रिंशत्तमः प्रकारः १२२

११००. ॐ ह्रीं मनसा कृतपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

११०१. ॐ ह्रीं मनसा कारितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

११०२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

११०३. ॐ ह्रीं वचसा कृतपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

११०४. ॐ ह्रीं वचसा कारितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

११०५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

११०६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

११०७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

११०८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति परिवर्त्तितदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
सप्तत्रिंशत्तमः प्रकारः १२३

११०९. ॐ ह्रीं मनसा कृतनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१११०. ॐ ह्रीं मनसा कारितनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

११११. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनिषिद्धदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१११२. ॐ ह्रीं वचसा कृतनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१११३. ॐ ह्रीं वचसा कारितनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१११४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनिषिद्धदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१११५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१११६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१११७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनिषिद्धदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति निषिद्धदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
अष्टत्रिंशत्तमः प्रकारः १२४

१११८. ॐ ह्रीं मनसा कृतअभिहृतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१११९. ॐ ह्रीं मनसा कारितअभिहृतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

११२०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअभिहृतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

११२१. ॐ ह्रीं वचसा कृतअभिहृतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

११२२. ॐ ह्रीं वचसा कारितअभिहृतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

११२३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअभिहृतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

११२४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअभिहृतदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

११२५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअभिहृतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

११२६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअभिहृतदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अभिहृतदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
ऊनचत्वारिंशत्तमः प्रकारः १२५

११२७. ॐ ह्रीं मनसा कृतउद्भिन्नदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

११२८. ॐ ह्रीं मनसा कारितउद्भिन्नदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

११२९.ॐ ह्रीं मनसानुमोदितउद्भिन्नदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

११३०. ॐ ह्रीं वचसा कृतउद्भिन्नदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

११३१. ॐ ह्रीं वचसा कारितउद्भिन्नदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

११३२.ॐ ह्रीं वचसानुमोदितउद्भिन्नदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

११३३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतउद्भिन्नदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

११३४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितउद्भिन्नदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

११३५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितउद्भिन्नदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति उद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
चत्वारिंशत्तमः प्रकारः १२६

११३६. ॐ ह्रीं मनसा कृतआच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

११३७. ॐ ह्रीं मनसा कारितआच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

११३८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितआच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

११३९. ॐ ह्रीं वचसा कृतआच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

११४०. ॐ ह्रीं वचसा कारितआच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

११४१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितआच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

११४२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतआच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

११४३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितआच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

११४४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितआच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति आच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
एकचत्वारिंशत्तमः प्रकारः १२७

११४५. ॐ ह्रीं मनसा कृतमालादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

११४६. ॐ ह्रीं मनसा कारितमालादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

११४७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमालादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

११४८. ॐ ह्रीं वचसा कृतमालादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

११४९. ॐ ह्रीं वचसा कारितमालादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

११५०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमालादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

११५१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमालादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

११५२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमालादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

११५३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमालादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मालादोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
द्विचत्वारिंशत्तमः प्रकारः १२८

११५४. ॐ ह्रीं मनसा कृतसंयोजनादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

११५५. ॐ ह्रीं मनसा कारितसंयोजनादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

११५६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंयोजनादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

११५७. ॐ ह्रीं वचसा कृतसंयोजनादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

११५८. ॐ ह्रीं वचसा कारितसंयोजनादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

११५९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंयोजनादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

११६०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंयोजनादोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

११६१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंयोजनादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

११६२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंयोजनादोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति संयोजनदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
त्रिचत्वारिंशत्तमः प्रकारः १२९

११६३. ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

११६४. ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

११६५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

११६६. ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

११६७. ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

११६८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

११६९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

११७०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

११७१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणा-समितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति प्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
चतुश्चत्वारिंशत्तमः प्रकारः १३०

११७२. ॐ ह्रीं मनसा कृतअंगारदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

११७३. ॐ ह्रीं मनसा कारितअंगारदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

११७४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअंगारदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

११७५. ॐ ह्रीं वचसा कृतअंगारदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

११७६. ॐ ह्रीं वचसा कारितअंगारदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

११७७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअंगारदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

११७८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअंगारदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

११७९.ॐ ह्रीं वपुषा कारितअंगारदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

११८०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअंगारदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अंगारदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
पंचचत्वारिंशत्तमः प्रकारः १३१

११८१. ॐ ह्रीं मनसा कृतधूमदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

११८२. ॐ ह्रीं मनसा कारितधूमदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

११८३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधूमदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

११८४. ॐ ह्रीं वचसा कृतधूमदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

११८५. ॐ ह्रीं वचसा कारितधूमदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

११८६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधूमदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

११८७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतधूमदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

११८८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितधूमदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

११८९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितधूमदोषरहितैषणासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति धूमदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
षट्चत्वारिंशत्तमः प्रकारः १३२

आदाननिक्षेपण समिति के ९ मंत्र

११९०. ॐ ह्रीं मनसा कृतादाननिक्षेपणसमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

११९१. ॐ ह्रीं मनसा कारितादाननिक्षेपणसमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

११९२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितादाननिक्षेपणसमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

११९३. ॐ ह्रीं वचसा कृतादाननिक्षेपणसमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

११९४. ॐ ह्रीं वचसा कारितादाननिक्षेपणसमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

११९५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितादाननिक्षेपणसमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

११९६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतादाननिक्षेपणसमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

११९७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितादाननिक्षेपणसमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

११९८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितादाननिक्षेपणसमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति आदाननिक्षेपणसमितिचारित्रस्य प्रकारः १३३

प्रतिष्ठापनासमिति के ९ मंत्र

११९९. ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रतिष्ठापनासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१२००. ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रतिष्ठापनासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१२०१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रतिष्ठापनासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१२०२. ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रतिष्ठापनासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१२०३. ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रतिष्ठापनासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१२०४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रतिष्ठापनासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१२०५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रतिष्ठापनासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१२०६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रतिष्ठापनासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१२०७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रतिष्ठापनासमिति-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति प्रतिष्ठापनासमितिचारित्रस्य प्रकारः १३४

मनगुप्ति के ९ मंत्र

१२०८. ॐ ह्रीं मनसा कृतमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१२०९. ॐ ह्रीं मनसा कारितमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१२१०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१२११. ॐ ह्रीं वचसा कृतमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१२१२. ॐ ह्रीं वचसा कारितमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१२१३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१२१४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१२१५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१२१६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मनोगुप्तिचारित्रस्य प्रकारः १३५

वचनगुप्ति के ९ मंत्र

१२१७. ॐ ह्रीं मनसा कृतवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१२१८. ॐ ह्रीं मनसा कारितवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१२१९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१२२०. ॐ ह्रीं वचसा कृतवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१२२१. ॐ ह्रीं वचसा कारितवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१२२२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१२२३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१२२४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१२२५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति वचनगुप्तिचारित्रस्य प्रकारः १३६

कायगुप्ति के ९ मंत्र

१२२६. ॐ ह्रीं मनसा कृतकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

१२२७. ॐ ह्रीं मनसा कारितकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

१२२८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१२२९. ॐ ह्रीं वचसा कृतकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१२३०. ॐ ह्रीं वचसा कारितकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

१२३१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१२३२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१२३३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

१२३४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति कायगुप्तिचारित्रस्य प्रकारः १३७

(समाप्त)

अथ सर्वदोषप्रायश्चित्तविधिः

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा त्रयस्त्रिंशदत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा अहिंसामहाव्रतस्यात्यासादना-त्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचौर्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपरिग्रहमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईर्यासमिते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं भाषासमिते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं एषणासमिते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं आदाननिक्षेपणसमिते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्सर्गसमिते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोगुप्तेसमिते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचोगुप्ते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं कायगुप्ते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुद्गलास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं आकाशास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वीकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्कायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं तेजःकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं वायुकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं वनस्पतिकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रसकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजीवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं आस्रवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं बंधपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं संवरपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्जरापदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं पापपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शनाय नमः।।३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्ज्ञानाय नमः।।३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्चारित्राय नमः।।३७।।

।। इति सर्वदोषप्रायश्चित्तविधिः।।